।। ॐ।। श्री गुरु चरण कमलेभ्यों नमः ।। 卐 ।।

शास्त्रोक्त महालक्ष्मी पूजन

श्री निखिल चेतना केन्द्र

पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

शास्त्रोक्त महालक्ष्मी पूजन

अश्विन कृष्ण अमावास्या को प्रातःकाल अपने गृह व पूजन-कक्ष को अच्छी तरह से साफ करने के बाद स्नान करना चाहिये। स्नान करने के बाद जिनके पिता न हो, उन्हें पितरों का पूजन-तर्पण करना चाहिये।

इसके बाद गत वर्ष मे स्थापित भगवती लक्ष्मी को जगाकर, उनका षोडशोपचार या पञ्चोपचार से पूजन करना चाहिये। साथ ही अन्य देवताओं का भी पूजन करना चाहिये। पूजन करने के बाद भगवती व देवताओं से अपनी त्रृष्टियों हेतु 'क्षमा-प्रार्थना' करनी चाहिये।

कार्तिक कृष्ण अमावास्या की रात्रि मे भगवान गणेश, भगवती लक्ष्मी की नवीन मूर्तियों की पूजा की जाती है। रेशमी वस्त्र पर अनार या बेल की लेखनी द्वारा लाल चन्दन से 'अष्ट-दल-कमल' पुष्प बनाकर नवीन मूर्ति को सुन्दर वस्त्र पहना कर स्थापित किया जाता है।

कहते है कि राजा बलि के कारागार मे लक्ष्मी सब देवताओं के साथ बन्धन मे थी। आज के दिन ही अश्विन कृष्ण अमावास्या को विष्णु ने उन सबको बन्धन से छुडाया था। बन्धन-मुक्त होते ही सभी देवता भगवती लक्ष्मी के साथ क्षीर-सागर मे जाकर सो गये थे।

अतः अश्विन कृष्ण अमावास्या को भगवान् गणेश व भगवती लक्ष्मी की सुन्दर नई मूर्तियों का पूजन किया जाता है। उनके शयन का सुन्दर प्रबन्ध किया जाता है, जिससे वे क्षीर -सागर न जाकर अपने घर मे ही प्रतिष्ठित रहे।

जो लोग भगवती लक्ष्मी का इस प्रकार स्वागत करते है, उन्हे छोडकर वे कभी कही नही जाती। इसके विपरीत जो आलस्य-वश या निद्रा-वश भगवती लक्ष्मी का पूजन नही करते, वे सदैव दरिद्रता से पीडित रहते है।

आत्म-शोधन :- स्नान आदि करके कर्ता शुद्ध स्थान मे पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे। तब पंच-पात्र द्वारा दाहिने हाथ मे जल लेकर निम्न लिखित मंत्र पढते हुये जल अपने ऊपर छिडके ।

।। ॐ अपवित्र पवित्रोऽवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इसके बाद पंच पात्र से पुनः जल लेकर तीन बार आचमन करे। 1.ॐ आत्म-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा। 2.ॐ विद्या-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा। 3.ॐ शिव-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

संकल्पः- तीन बार आचमन करने के बाद पंच-पात्र से पुनःजल लेकर दाहिने हाथ की जूठी हथेली को स्वच्छ करे। ऐसे स्वच्छ दाहिने हाथ की हथेली में पुनः बाँये हाथ द्वारा अचमनी से जल, अक्षत, पुष्पादि लेकर पूजा का संकल्प पढे।

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेत वराह कल्पे, जम्बू द्वीपे, भरत-खण्डे, अमुक-प्रदेशे, अमुक-पुण्य क्षेत्रे, कलियुगे, कलि-प्रथम चरणे, (अमुक) नाम संवत्सरे, अश्विन मासे, कृष्ण पक्षे, अमावास्या-तिथौ,(अमुक)-वासरे, (अमुक)-गोत्रोत्पन्नोहं, (अमुक)शर्माऽहं सपत्नीकस्य, सपुत्रस्य, सबान्धवस्य सर्वत्र यशो-विजयादि लाभार्थं सर्वारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं सकल मनोकामना सिद्ध्यर्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, प्राप्त लक्ष्मी चिर काल संरक्षणार्थं, प्रचलित व्यापार प्रतिष्ठाने बहु धन लाभार्थं श्री महा लक्ष्मी प्रसन्नार्थं (यदि नये बही खाते का पूजन हो, तो(अमुक नामकस्य)मम व्यापार प्रतिष्ठानस्य नूतन वासना पूजन कर्मणः साङ्गता सिद्धऽर्थं इतना और जोड लेना चाहिये) स्वस्ति वाचन कलश स्थान पूर्वक यथा सम्पादित सामग्रया गणपति सूर्यादि नवग्रह षोडश मातृकादि पूजन सहितं दीपावल्या श्री गणेश लक्ष्मी प्रतिमा पूजनम् करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प पढकर दाहिने हाथ मे लिया हुआ जल अपने सम्मुख छोड दे।

***शान्ति पाठ :-* (स्वस्ति वाचन)**

ॐ आ नो भद्राः कतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदामिद्वृधे असन्नप्रयुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।1।।
ॐ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गुं रातिरभि नो निवर्तताम् ।
देवानां गुं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।2।।
ॐ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदीतिन्दक्षम स्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुण गं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत् ।।3।।

ॐ तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथ्वी तत्पिता द्यौः।।
तद् ग्रावाणः सोम-सुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्यायुवम् ।।4।।
ॐ तमीशानं जगतः तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।5।।
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व-वेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्योऽरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।6।।
ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्नि जिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वे नो देवाऽवसा गमन्निह।।7।।
ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुव **गुं** सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः।।8।।
ॐ शतमिन्नु शरदोऽन्ति देवा यत्रा नश्चक्राजरसं तनूनां।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो।।9।।
ॐ अदिति द्यौरदितिरन्तरिक्ष मदितिः। माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवा अदितिः। पञ्च जनाः अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम् ।।10।।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।11।।

शान्ति पाठ से शरीर सब प्रकार से शुद्ध हो जाता है तथा अकल्याण और अशुभ दूर हो जाता है।

मङ्गल पाठ :- हाथ मे अक्षत या पुष्प लेकर अपने मङ्गल की कामना से स्तुति करे।

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।1।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।2।।
विद्यारम्भे विवाहे च विदेश गमने तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।।

शुक्लाम्बर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।4।।
सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सवार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि! नमोऽस्तुते।।5।।
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।।6।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, तारा बलं चन्द्र बलं तदेव।
विद्या बलं दैव बलं तदेव, लक्ष्मीपतेरंघ्रि युगं स्मरामि।।7।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कृतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।8।।
विनायकं गुरु भानु ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कार्यार्थं सिद्धये।।9।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।10।।
सर्वेष्वारब्ध कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दना।।11।।

कलश स्थापना :- मङ्गल पाठ कर चुकने पर कलश स्थापन हेतु पूजा करे। कलश की जगह की पृथ्वी को हाथ से स्पर्श कर यह मंत्र पढे।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्व धाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथ्वीं दृं गुं ह पृथिवीं मा हि गुं सीः।।

कलश की जगह पर मिट्टी और यव छोडे और यह मंत्र पढेः-

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे द्यां देवो वः सविता हिरण्य पाणिः।
प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

कलश को धीरे से उठाकर उसी जगह रखे दे और यह मंत्र पढेः-

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।पुनरुर्ज्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः।।

कलश मे जल छोडे और यह मंत्र पढेः-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणेस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदनमासीद।।

कलश के गले मे लाल वस्त्र या मौली लपेटे तथा यह मंत्र पढेः-

ॐ वसोः पवित्रमसि शत-धारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत-धारेण सुप्वा काम-धुक्षः।।

कलश मे सुपारी छोडे और यह मंत्र पढेः-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचंत्वगं हसः।।

कलश मे एक रुपये का सिक्का चढावे और यह मंत्र पढेः-

ॐ हिरण्य गर्भः सम वर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां तस्मै देवाय हविषा विधेम।।

गन्ध, रोली आदि चढावे और यह मंत्र पढेः-

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीं।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

सर्वौषधि छोडकर यह मंत्र पढेः-

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा।
मनैनु बभ्रूणा मह शतं धामानि सप्त च।।

सप्त मृत्तिका छोडकर यह मंत्र पढेः-

ॐ स्योना पृथिवि! नो भवान्नृक्षरा निवेशिनी।
यच्छा नः शर्म स-प्रथाः।।

दुर्वा चढाकर यह मंत्र पढे :-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषस्परि।
एवानो दुर्वे! प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ।।

आम, वड, गूलर या पीपल के पत्ते डालकर यह मंत्र पढे :-

ॐ अश्वत्थे वो निषदनम्पणे वो वसतिष्कृत।
गोभाज इत्किलासथ यत्म नवथ पुरुषम् ।।

कुशा छोडकर यह मंत्र पढेः-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ,
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।।
तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य,
यत् कामः पुनेतच्छकेयम् ।।

यव या चावलों से भरा पात्र कलश पर रखकर यह मंत्र पढेः-

ॐ पूर्णादर्वि परापत सु-पूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणा वहा इष मूर्ज्ज गं शत-क्रतो।।

यह मंत्र पढे और अक्षत छोडकर वरुण स्थापन करे :-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं,
तनो त्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु।
विश्वे देवा स इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठ।।

फिर इस मंत्र से आवाहन आदि करे :-

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण ! इहागच्छ,
इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।।

तदनन्तर निम्न मंत्रों से श्री वरुण देव का पाद्यादि उपचारों से क्रमशः पूजन करेः-

ॐ वरुणाय नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः धूपं आघ्रापयामि।
ॐ वरुणाय नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ वरुणाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

पूजा कर चुकने पर नीचे के मंत्रों से प्रार्थना करेः-

ॐ सरितः सागराः शैलस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम भक्तस्य दुरित क्षय कारकाः।।1।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणाः स्मृताः।।2।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्त-द्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः साम वेदोप्यथर्वणः।।3।।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
देव दानव सम्वादे मध्यमाने महोदधौ।।4।।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयं।
त्वत्तः सर्वाणि तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।।5।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानित्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।।6।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स-पैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।।7।।
त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा।।8।।

भगवान गणपति की पूजा

सर्व प्रथम भगवान् गणपति का पूजन करने के लिए एक सुडौल सुन्दर सुपारी को जल से स्वच्छ कर मौली (रक्त-पीत सुत) से लपेट कर कलश के सम्मुख किसी आधार (चाँदी, पीतल या किसी शुभ धातु या मिट्टी के पात्र) पर स्थापित करे। तब उसमे पहले भगवान् गणपति के आविर्भाव को भावना निम्न मंत्र से गन्धाक्षत छोडकर करे।

पाद्य :- स्वागत कर निम्न-लिखित मन्त्र से पाद्य (पैर धोने हेतु जल) समर्पित करे -

पाद्यं गृहाण देवेश, सर्व - क्षेम - समर्थ, भोः ।
भक्त्या समार्पितं देव, गण-पते! नमोऽस्तु ते ।।

अर्घ्य :- नमस्ते देव-देवेश! नमस्ते धरणी-धर ।
नमस्ते जगदाधार, गणेश! अर्घ्य गृहाण ।
गन्ध-पुष्पाक्षतैर्युक्तं फल-द्रव्य-समन्वितम् ।
गृहाण तोयमर्घ्यर्थं परमेश्वर,वत्सल ।
।।श्री गणेश-देवाय अर्घ्यं समर्पयामि ।।

गन्ध (चन्दन) समर्पण :-

श्रीःखण्ड-चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं गणपते । चन्दनं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्री गणेश देवाय चन्दनं समर्पयामि ।।

पुष्प-समर्पणः-

यथा-प्राप्त-ऋ तु-पुष्पैः विल्व-तुलसी-दलेश्च ।
पुजयामि गणपते! प्रसीद मे सुरेश्वर ।
।। श्री गणेश-देवाय पुष्पं समर्पयामि ।।

धूप-समर्पण :-

वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढ्य सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्व-देवानां धुपाऽयं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्रीगणेश-देवाय धूपं आघ्रापयामि ।।

दीप-समर्पण :-

साज्यं वर्ति-संयुक्तं च वह्निना योजितं मया,
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्य-तिमिरापहम् ।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपो-यं प्रिति-गृह्यताम् ।
।। श्रीगणेश-देवाय दीपं दर्शयामि ।।

नैवेद्य-समर्पण :-

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च ।
आहारो भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। यथांशतः श्रीगणेश-देवाय नैवेद्यं समर्पयामि- ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।।

आचमन (जल) समर्पण :-

ततः पानीयं समर्पयामि इति उत्तरापोशनम् ।
हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि । मुख - प्रक्षालनं ।
।।करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।।

ताम्बूल-समर्पण :-

पूगी-फलं महा-दिव्यं नाग-वल्ली-दलैर्युतम् ।
कर्पूरैला-समायुक्तं ताम्बूलं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्रीगणेश-देवाय मुख-वासार्थं पूगी-फलं - युक्तं ताम्बूलं समर्पयामि ।।

दक्षिणा :-

हिरण्य-गर्भ-गर्भस्थं हेम-वीजं विभावसोः ।
अनन्त-पुण्य-फलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ।।
।। श्रीगणेश-देवाय सुवर्ण-पुष्प-दक्षिणां समर्पयामि ।।

प्रदक्षिणा :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर - कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं प्रभो ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन क्षमस्व परमेश्वर ।।
।। श्रीगणेश-देवाय प्रदक्षिणां समर्पयामि ।।

वन्दना-सहित पुष्पाञ्जलि :-

कर-कृतं वा कायजं कर्मजं वा,
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विदितमविदितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे, श्री गणपते! त्राहि ।
।। श्रीगणेश-देवाय मन्त्र-पुष्पं समर्पयामि ।।

साष्टाङ्ग-प्रणाम :- निम्न मन्त्र पढकर साष्टाङ्ग प्रणाम कर नमस्कार करें -

नमः सर्व-हितार्थाय जगदाधार - हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं सुप्रणामः प्रयत्नेन मया कृतः ।।
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र-मूर्तये सहस्त्र-पादाक्षि-शिरोरु-बाहवे ।

क्षमा-प्रार्थना :-

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा-कर्म न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।
मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं भक्ति-हीनं सुरेश्वर ।
मया यत्-पूजितं देव! परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

अपराध - सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ।
विधेहि देव! कल्याणं विधेहि विपुला श्रियम् ।
रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, द्विषो जहि ।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।
अनेन यथा-मिलितोपचार-द्रव्यैः कृत - पूजनेन श्रीगणेश-देवः प्रीयताम् ।
।। श्री गणेश-देवार्पणमस्तु ।।

इस प्रकार भगवान् गणेश का षोडशोपचार पूजन करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे---

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्य - रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्त्ता! त्राता भव भवार्णवात् ।
।। अनेन पूजनेन श्रीगणेशः ऋद्धि-सिद्धि-सहितः प्रीयताम्, नमो नमः।।

नव-ग्रह पूजन

नौ ग्रहों के संक्षिप्त पूजन के लिए कलश के सम्मुख एक पात्र या मिट्टी का प्याला रख ले। फिर बाँएँ हाथ मे गन्धाक्षत लेकर भावना से सामूहिक रुप मे उन सबका निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आवाहन करे।

ॐ सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनिश्चर-राहु-केतु नव ग्रहेभ्यो नमः। ॐ नव ग्रहाः! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।

यह मंत्र पढकर उक्त पात्र मे गन्धाक्षत छोडे। फिर निम्न मंत्रों से प्रत्येक मंत्र के आदि मे ॐ लगाकर क्रमशः सूर्यादि नौ ग्रहों का पाद्यादि उपचारों से पूजन करे।

ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि।

फिर हाथ जोडकर सभी ग्रहों की प्रार्थना करेः-

ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानु-शशी-भूमि-सुतोबुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति-करा भवन्तु।।

षोडश मातृका पूजन

षोडश मातृकाओं के संक्षिप्त पूजन के लिए नव ग्रहों के पात्र के पास ही उसी प्रकार का दूसरा पात्र रखे। फिर दाये हाथ में गन्धाक्षत लेकर पूर्ववत् सामूहिक रुप मे निम्न मंत्र से उनका आवाहन करे।

ॐ गौरी-पद्मा-शची-मेधा-सावित्री-विजया-जया-देवसेना-स्वधा-स्वाहा-माता-लोक-माता-हृष्टिं-पुष्टि-तुष्टि-कुल देवता-षोडश मातृकाभ्यो नमः। ॐ षोडश मातृकाः इहा गच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजा गृहाण।

यह मंत्र पढकर निर्दिष्ट पात्र मे गन्धाक्षत छोडे। फिर क्रमशः निम्न मंत्रों से सोलह मातृकाओं का पाद्यादि उपचारों से पूजन करे। प्रत्येकमंत्र के आदि मे पूर्व वत् ॐ जोड ले।

ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि।

फिर हाथ जोडकर सोलह मातृकाओं की प्रार्थना करे।

ते सम्मता जन पदेषु धनानि तेषां, तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्य दारा, येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।

गुरु पूजन

ध्यानः-

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं ।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम् ।।
श्रुतिशिरसिविभांतं बोधमार्तण्डमूर्ति ।
शमिततिमिरशोक श्रीगुरुं भावयामि ।।
हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं।
सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम् ।।
ध्यायेद्गुरु चन्द्रशिलाप्रकाशं ।
चित्पुस्तकाभिष्टवरं दधानम् ।।

श्री गुरुपादुकाभ्यो नमः। ध्यानं समर्पयामि। ॐ स्वरुपनिरुपण हेतवे श्री गुरुवे नमः।ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्श हेतवे श्री परमगुरुवे नमः।ॐ स्वात्माराम पन्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरुवे नमः। आवाहयामि, पूजयामि।

फिर गुरु को पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि समर्पित कर दोनो हाथ जोडकर प्रार्थना करे।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानान्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णो गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

भगवती लक्ष्मी की पूजा

गुरु पूजन के बाद साधक महालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करे। सर्व प्रथम महालक्ष्मी का हाथ जोडकर ध्यान करे। ध्यान से पूर्व अगरबत्ती, तेल और घी का दीपक प्रज्वलित कर दे और शुद्ध मन से पूर्ण निष्ठा के साथ भगवती महालक्ष्मी का आह्वान करे।

ध्यान :- भगवती लक्ष्मी का ध्यान पहले से अपने सम्मुख प्रतिष्ठित श्रीलक्ष्मी की नवीन प्रतिमा मे करें । यथा -

या सा पद्मासनस्था विपु-कटि-तटी पद्म-पत्रायताक्षी,
गम्भीरार्तव-नाभिः स्तन-भर-नमिता शभ्र-वस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्य-रूपैर्मणि-गण-खचितैः स्वापिता हेम-कुम्भैः,
सा नित्यं पद्म-हस्ता मम वसतु गृहे सर्व-मांगल्य-युक्ता ।।

आवाहन :- श्री भगवती लक्ष्मी का ध्यान करने के बाद, निम्न मन्त्र पढते हुये श्रीलक्ष्मी की प्रतिमा के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखाकर, उनका आवाहन करे। यथा -

आगच्छ देव - देवेशि । तेजोमयि महा-लक्ष्मि ।
क्रियमाणां मया पूजां, गृहाण सुर - वन्दिते ।
।।श्रीलक्ष्मी-देवी, आवाहयामि ।।

पुष्पाञ्जलि :- आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ कर उन्हें आसन के लिये पाँच पुष्प अञ्जली में लेकर अपने सामने छोड़े -

नाना-रत्न-समायुक्तं, कार्त-स्वर-विभुषितम् ।
आसनं देव-देवेशि! प्रीत्यथँ प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै आसनार्थे पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ।।

स्वागत :- पुष्पांजलि-रूप आसन प्रदान करने के बाद हाथ जोडकर 'श्रीलक्ष्मी-देवि! स्वागतम्' अर्थात् 'हे देवि, लक्ष्मी! आपका स्वागत है' - यह वाक्य कहे।

पाद्य :- स्वागत कर निम्न-लिखित मन्त्र से पाद्य (चरण धोने हेतु जल) समर्पित करे -

पाद्यं गृहाण देवेशि, सर्व - क्षेम - समर्थे, भोः ।
भक्त्या समर्पितं देवि, महा-लक्ष्मिं! नमोऽस्तुते ।।
।।श्रीलक्ष्मी-देव्यै पाद्यं समर्पयामि ।।

अर्घ्य :- पाद्य-समर्पण के बाद उन्हें अर्घ्य (शिर के अभिषेक हेतु जल) समर्पित करे -

नमस्ते देव - देवेशि! नमस्ते कमल - धारिणि ।
नमस्ते श्री महा-लक्ष्मि, धनदा-देवि! अध्ये गृहाण ।।
गन्ध-पुष्पाक्षतैर्युक्तं, फल - द्रव्य - समन्वितम् ।
गृहाण तोयमर्घ्यर्थ, परमेश्वरि वत्सले ।
।। श्रीलक्ष्मि-देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

गन्ध (चन्दन) समर्पण :-

श्री-खण्ड-चन्दनं दिव्यं, गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं महा-लक्ष्मि! चन्दनं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै चन्दनं समर्पयामि ।।

पुष्प-समर्पण :-

यथा-प्राप्त-ऋ तु-पुष्पैः, बिल्व-तुलसी-दलैश्च ।
पूजयामि महा-लक्ष्मि । प्रसीद मे सुरेश्वरि ।
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै पुष्पै समर्पयामि ।।

अङ्ग-पूजन :- निम्न-लिखित मन्त्र पढ़ते हुए भगवती लक्ष्मी के अङ्ग-देवताओं का पूजन करना चाहिए । बाँएँ हाथ में चावल, पुष्प व चन्दन लेकर प्रत्येक मन्त्र का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ से श्री लक्ष्मी जी की मूर्ति के पास छोड़े । यथा-

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि ।
ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पूजयामि ।
ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि ।
ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि ।
ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि ।
ॐ विश्व-वल्लभायै नमः वक्ष-स्थलं पूजयामि ।
ॐ कमल-वासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि ।
ॐ कमल-पत्राक्ष्यै नमः नेत्र-त्रयं पूजयामि ।
ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि ।

अष्ट-सिद्धियों की पूजा

अङ्ग-देवताओं की पूजा करने के बाद पुनः बाँएँ हाथ में चन्दन, पुष्प व चावल लेकर दाएँ हाथ से भगवती लक्ष्मी की मूर्ति के पास ही अष्ट-सिद्धियों की पूजा करे -

ॐ अणिम्ने नमः। ॐ महिम्ने नमः। ॐ गरिम्णे नमः ।ॐ लघिम्नेनमः। ॐ प्राप्त्यै नमः। ॐ प्राकाम्यै नमः । ॐ ईशितायै नमः ।ॐ वशितायै नमः।

अष्ट-लक्ष्मियों की पूजा

अष्ट-सिद्धियों की पूजा के बाद उपर्युक्त विधि से भव लक्ष्मी की मूर्ति के पास ही अष्ट-लक्ष्मियों की पूजा चावल, चन्दन और पुष्प से करे । यथा -

1. ॐ आद्य-लक्ष्म्यै नमः। 2. ॐ विद्या-लक्ष्म्यै नमः। 3. ॐ सौभाग्य-लक्ष्म्यै नमः 4. ॐ अमृत-लक्ष्म्यै नमः । 5. ॐ कमलाक्ष्यै नमः । 6. ॐ सत्य-लक्ष्म्यै नमः। 7. ॐ भोग-लक्ष्म्यै नमः । 8. ॐ योग-लक्ष्म्यै नमः ।

धूप-समर्पण :-

वनस्पति-रसोद्भूती, गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्व-देवानां, धूपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै धूपं आघ्रापयामि ।।

दीप - समर्पण :-

साज्यं वर्ति-संयुक्तं च, वह्निना योजितं मया,
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्य-तिमिरापहम् ।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि, श्रीलक्ष्म्यै परात्परायै ।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्, दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ।।
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै दीपं दर्शयामि ।।

नैवेद्य-समर्पण :-

शर्कराःखण्ड-खाद्यानि, दधि-क्षीर-घृतानि च ।
आहारो भक्ष्य-भोज्यं च, नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम् ।
।।यथांशतः क्षीलक्ष्मी-देव्यै नैवैद्यं समर्पयामि -

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।।

आचमन (जल) समर्पण :-

ततः पानीयं समर्पयामि इति उत्तरापोशनम् ।
हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि । मुख - प्रक्षालनं ।
करोद्धर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल-समर्पण :-

पूगी-फलं महा-दिव्यं, नाग-वल्ली-दलैर्युतम् ।
कर्पूरैला-समायुक्तं, ताम्बूलं प्रति-गृह्यताम् ।।
।।श्रीलक्ष्मी-देव्यै, मुख-वासाय पूगी-फलं-युक्तं ताम्बूलं समर्पयामि ।।

दक्षिणा :-

हिरण्य-गर्भ-गर्भस्यं, हेम-बीजं विभावसोः ।
अनन्त-पुण्य-फलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ।।
।।श्रीलक्ष्मी-देव्यै सुवर्ण-पुष्प-दक्षिणां समर्पयामि ।।

महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मइया जय लक्ष्मी माता,
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।।ॐ जय लक्ष्मी ...

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता,
सुर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

दुर्गा रुप निरंजनि, सुख सम्पति दाता,
जो कोई तुमको ध्याता, रिधी सिधि धन पाता ।।ॐ जय लक्ष्मी ...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता,
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

जिस घर में तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता,
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता,
खान पान का वैभव, सब तुम से आता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता,
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता । ॐ जय लक्ष्मी ...।।7।।

जल आरती :-ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिःर्ब्रह्माशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ।

प्रदक्षिणा :-

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति, प्रदक्षिणं पदे पदे ।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं देवि ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन, क्षमस्व परमेश्वरि ।।
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै प्रदक्षिणं समर्पयामि ।।

वन्दना-सहित पुष्पाञ्जली :-

कर चरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा,
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विदितमविदितं वा, सर्वमेतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे, श्रीमहा-लक्ष्मि त्राहि ।
।। श्री-लक्ष्मी देव्यै मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पयामि ।।

साष्टाङ्ग-प्रणाम :- निम्न मंत्र पढकर साष्टाङ्ग प्रणाम कर नमस्कार करें ।

ॐ भवानि! त्वं महा-लक्ष्मीः सर्व-काम-प्रदायिनी ।
प्रसन्ना सन्तुष्टा भव देवि! नमोऽस्तु ते ।
।। अनेन पूजनेन श्रीलक्ष्मी-देवी प्रीयताम्, नमो नमः ।।

(अर्थात् - हे भवानि! आप सभी कामनाओं को देनेवाली महा-लक्ष्मी हैं । हे देवी! आप प्रसन्न और सन्तुष्ट हों । आपको नमस्कार ।
।। इस पूजन से श्रीलक्ष्मी देवी प्रसन्न हों, उन्हे बारम्बार नमस्कार ।।)

क्षमा-प्रार्थना :-

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा-कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।
मन्त्र-हीनं क्रिया हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि ।
मया यत्-पूजितं देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
अनेन यथा-मिलितोपचार-द्रव्यै कृत-पूजनेन श्रीलक्ष्मी-देवी प्रीयताम्
।। श्रीलक्ष्मी-देव्यै अर्पणमस्तु ।।

'लेखनी-दावात' पर - महा-काली पूजन

भगवती लक्ष्मी की नवीन मूर्ति की पूजा करने के बाद दावात और कलम को पूजा-स्थान पर रक्खे । दाएँ हाथ की अनामिका से रोचना, लाल-चन्दन या रोली द्वारा उन पर 'स्वस्तिक' का चिह्न बनाए ।
वहीं भगवती श्रीकाली का पूजन करे । यथा--

ध्यान :- सबसे पहले भगवती श्रीकाली का ध्यान करे, यथा -

सद्यश्छिन्न - शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं ।
घोरास्यां शिरसां स्त्रजं सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलीम् ।।
सृक्कासृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालंकृति ।
श्यामाङ्गी कृत-मेखला शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम् ।।

आवाहन :-

भगवती काली का ध्यान करने के बाद, लेखनी-दावात के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र पढते हुए उनका आवाहन करे--

ॐ देवेशि! भक्ति-सुलभे । परिवार - समन्विते ।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ।।
दुष्पारे घोर - संसार - सागरे पतितं सदा ।
त्रायस्व वरदे, देवि! नमस्ते चित् - परात्मिके ।।
ये देवा, याश्व, देव्यश्व, चलितायां चलन्ति हि ।
आवाहयामि तान् सर्वान् कालिके, परमेश्वरि ।।
प्राणान् रक्ष, यशो रक्ष, रक्ष दारान्, सुतान्, धनम् ।
सर्व-रक्षा-करी यस्मात् त्वं हि देवि, जगन्मये ।।
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन् यावत् पूजां करोम्यहम् ।
सर्वानन्द - करे, देवि! सर्व - सिद्धिं प्रयच्छ मे ।।
तिष्ठात्र कालिके, मातः! सर्व - कल्याण - हेतवे ।
पूजां गृहाण सुमपखि! नमस्ते शंकर प्रिये।।
।।श्री महाकाली देवीं आवाहयामि।।

पुष्पाञ्जलि - पूर्वक पूजन :-

आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढकर उनके आसन के लिए पाँच पुष्प अञ्जली मे लेकर अपने सामने छोडे ---

नाना - रत्न - समायुक्तं, कार्त - स्वर - विभूषितम् ।
आसनं देव - देवेशि! प्रीत्यर्थे प्रति - गृह्यताम् ।।
।। श्रीमहा-काली-देव्यै आसनायै पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ।।

इस प्रकार पूजन करने के बाद बाँएँ हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर दाहिने हाथ द्वारा निम्न मन्त्र पढते हुए 'लेखनी-दावात' पर छोडे --

ॐ महा-काल्यै नमः ।अनेन पूजनेन श्रीकाली देवी प्रीयताम् नमो नमः।

बही-खाते पर 'सरस्वती-पूजन'

दावात और कलम के ऊपर भगवती श्रीकाली का पूजन करने के बाद, पहले से गन्धाक्षत द्वारा स्वस्तिका - रचित बही - खाते के ऊपर भगवती सरस्वती का पूजन करे । यथा -

ध्यान :-

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला, या शुभ्र - वस्त्रावृता
या वीणा-वर-मण्डित-करा, या श्वेत - पद्मासना ।
या ब्रह्माऽच्युत - शङ्कर - प्रभृतिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ।।

आवाहन :-

भगवती सरस्वती का ध्यान करने के बाद, बही-खाते के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र पढते हुए उनका आवाहन करे -

आगच्छ देव - देवेशि! तेजोमयि सरस्वति ।
क्रियमाणां मया पूजां, गृहाण सुर-वन्दिते ।
।। श्रीसरस्वती-देवीं आवाहयामि ।।

पुष्पाञ्जली - पूर्वक पूजन :-

आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ.कर उनके आसन के लिए पाँच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने रक्खे बही-खाते के निकट छोडे।

नाना - रत्न - समायुक्तं, कार्त्त-स्वर - विभूषितम् ।
आसनं देव - देवेशि! प्रीत्यर्थ प्रति - गृह्यताम् ।।
।। श्रीसरस्वती-देव्यै आसनार्थ पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ।।
ॐ श्री सरस्वत्यै नमः । अनेन पूजनेन श्रीसरस्वती देवी
प्रीयंताम् । नमो नमः ।

अर्थात्-श्री सरस्वती को नमस्कार । इस पूजन से श्रीसरस्वती देवी प्रसन्न हों, उन्हें बारम्बार नमस्कार ।

तिजोरी-बक्से आदि पर - श्रीकुबेर-पूजन

बही-खाते का पूजन करने के बाद, तिजोरी, बक्से आदि पर सिन्दूर से 'स्वस्तिक'-चिह्न बनाए। उन पर 'मौली' बाँध कर श्रीकुबेर का पूजन करे।

ध्यान :-

मनुज - बाह्य - विमान - स्थितम् ,
गरुड - रत्न - निभं निधि - नायकम् ।
शिव - सखं मुकुटादि - विभूषितम्,
वर - गदे दधतं भजे तुन्दिलम् ।।

आवाहन :- भगवान् श्रीकुबेर का ध्यान करने के बाद तिजोरी-बक्से आदि के सम्मुख आवाहन-मुद्रा दिखाकर, निम्न मन्त्र द्वारा उनका आवाहन करे।

आवाहयामि देव! त्वामिहायाहि कृपां कुरू ।
कोशं वर्द्धय नित्यं, त्वं परि - रक्ष सुरेश्वर ।।
।। श्रीकुबेर - देवं आवाहयामि ।।

पुष्पाञ्जलि-पूर्वक पूजन :- आवाहन करने के बाद निम्न मन्त्र पढकर श्रीकुबेर देव के आसन के लिए पाँच पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने, तिजोरी-बक्से आदि के निकट छोड़े --

नाना - रत्न - समायुक्तं, कार्त्त - स्वर - विभूषितम् ।
आसनं देव - देवेश! प्रीत्यर्थ प्रति - गृह्यताम् ।।
।। श्रीकुबेर-देवाय आसनार्थे पञ्च-पुष्पाणि समर्पयामि ।।

इस प्रकार पूजन करने के बाद बाँएँ हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर दाहिने हाथ द्वारा निम्न मन्त्र पढते हुए 'तिजोरी-बक्से' आदि पर छोड़े ।

ॐ श्री कुबेराय नमः । अनेन पूजनेन श्रीधनाध्यक्ष-
श्रीकुबेरः प्रीयंताम् । नमो नमः ।

तुला, मसी पूजन :-

सिन्दूर से तराजू आदि पर स्वस्तिक बना ले। उस पर मौली लपेटकर तुलाधिष्ठातृ देवता का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ।।

ध्यान के बाद **ॐ तुलाधिष्ठातृ देवतायै नमः** इस नाम मंत्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करे ।

दीप-मालिका पूजन :-

भगवान् गणेश एवं भगवती लक्ष्मी की नवीन मूर्ति की पूजा, क्लम-दावात की पूजा, बही-खाते की पूजा और तिजोरी-बक्से की पूजा करने के बाद पारिवारिक परम्परा के अनुसार पूज्य पितरों तथा कुल-देवता, ग्राम-नगर-देवताओं के बीच में सरसो के तेल का एक बड़ा दीपक और उसके चारों ओर ग्यारह-इक्कीस-इक्यावन अथवा अधिक छोटे दीपक, एक परात (बड़ी थाली)

में रखकर सजा ले । तब 'दीप-देव' का ध्यान करे --

भो दीप! ब्रह्म - रूपस्त्वं ह्यन्धकार - विनाशकः ।
गृहाण मया कृतां पूजां, ओजस्तेजः प्रवर्धय ।।
ॐ दीप - वृक्षाय नमः ।
अर्थात् - दीप-वृक्ष को नमस्कार है ।

इसके बाद निम्न मन्त्रों द्वारा प्रार्थना कर दीप-मालिका को नमस्कार करे

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुख - सम्पदम् ।
मम बुद्धि - प्रकाशं च दीप - ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ।।
शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पष्टि - वर्धनम ।
आत्म तत्व प्रबोधाय दीप-ज्योतिर्नमो ऽस्तु ते ।।
दीपावलिर्मया दत्त हहाण त्वं सुरेश्वरी।
अनेन दीप-दानेन ज्ञान-दृष्टि-प्रदा भव।।

विसर्जन :-

उपर्युक्त प्रकार पूजा करने के बाद, पूजा नें उपस्थित, सभी बालक-पुरुष-महिलाएँ अपने हाथों में पुष्प लेकर भगवान गणेश, महा-लक्ष्मी, महा-काली, महा-सरस्वती, कुबेर की जय-जयकार बोलें तथा छोटे-बड़े के क्रम से उनके सम्मुख पुष्प अर्पित करते हुए दण्ड-वत् प्रणाम करें।

दण्ड-वत् प्रणाम करने के बाद पूजा करनेवाला दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर विसर्जन हेतु निम्न मन्त्र पढे --

यान्तु देव-गणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् ।
इष्ट- काम- समृद्ध्यर्थ, पुनरागमनाय च ।।

विशेष :- पूजा के निमित्त प्रज्ञवलित दीपक रात्रि भर जलता रहे, इसकी व्यवस्था करनी चाहिए।

पूजा-स्थान में ही बैठकर रात्रि-पर्यन्त श्री-सुक्त, लक्ष्मी-सुक्त , पद्मावति स्तोत्र, लक्ष्मी जी की अन्य स्तुतियों का पाठ करे ।

दीक्षा-प्राप्त व्यक्ति अपने इष्ट-मन्त्र अथवा अन्य अभीष्ट मन्त्र का जप कर सकते हैं।